मंथन

26 जनवरी, 2024

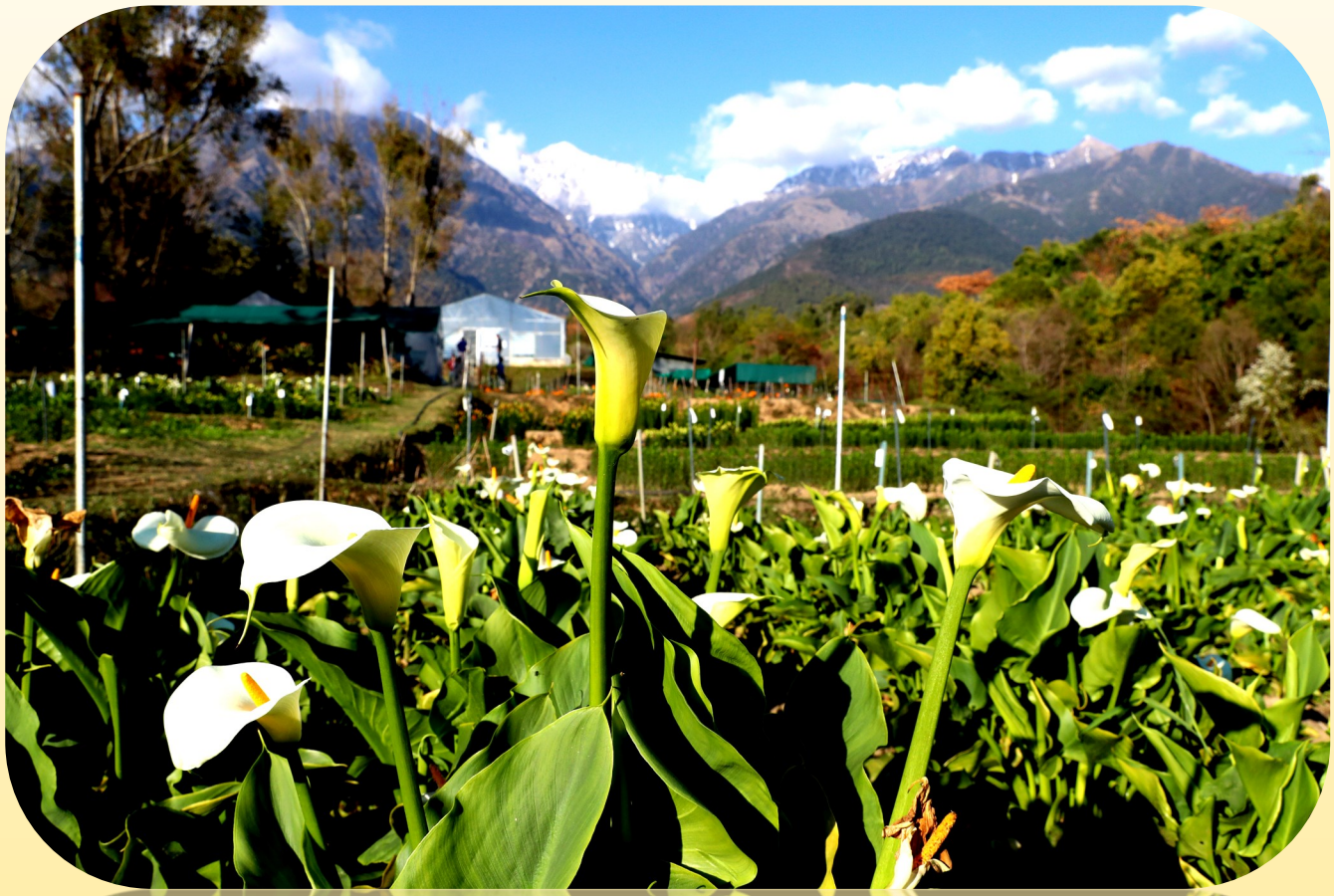

स्टाफ क्लब

सीएसआईआर- हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान

पालमपुर, हिमाचल प्रदेश, भारत

सीएसआईआर
CSIR
भारत का नवाचार इंजन
The Innovation Engine of India

CSIR-IHBT
INDIA
1983
उज्जवल भविष्य का नवोन्मेष हब
Innovation Hub for Better Tomorrow

मंथन

स्टाफ क्लब, सी.एस.आई.आर.- हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर

वर्ष 18 **अंक 1** **26 जनवरी, 2024**

आमुख

स्टाफ क्लब की पत्रिका "मंथन" 2024 का पहला अंक आपके समकक्ष प्रस्तुत है। आपके अन्दर विद्यमान वे प्रतिभायें, जिन्हें आप बोल कर या अन्य किसी रूप में व्यक्त नहीं कर सकते, उन्हें मंथन के माध्यम से लघुलेख, कथा, कलाकृति, रेखाचित्र, कविता या अन्य किसी भी रूप में व्यक्त कर सकते हैं तथा छिपी प्रतिभा को निखार सकते हैं।

"मंथन की भावना है-भावनाओं का मंथन"

स्टाफ क्लब के सभी सदस्यों एवं उनके परिजनों से निवेदन है, कि वे मंथन के आगामी अंकों के लिए भी प्रविष्टियां देते रहें, ताकि मंथन के आने वाले अंक समय से प्रकाशित किया जा सके।

इस अंक में प्रविष्टियां देने एवं सहयोग करने वालों का स्टाफ क्लब की ओर से धन्यवाद।

संपादक: धर्म सिंह

संकलन: जसबीर सिंह

विषय सूची

क्रम संख्या	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	जिंदगी	स्मिता कपूर	03
2.	मुझे नहीं पता कि मैं क्यों रोया	अनिल कुमार	04
3.	हमारा संस्थान	राहुल सिंह	05
4.	गाँव की सुनहली यादें	प्रणव कुमार मिश्र	06
5.	अजेय और अडिग	अवनेश कुमारी	07
6.	An Ode To Apoptosis Nymph	Satyakam	08
7.	मदिरापान और धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है	सहदेव चौधरी	09
8.	CSIR-IHBT: From Mountain High to Cellular Deep	Anil	10-11
9.	बस कसम ये हमने खाई है	जगदीप	12
10.	आस्था और वास्तुकला का बेजोड़ संगम: अयोध्या राम मंदिर	रोहित जोशी	13-16
11.	India – Mother of Democracy	Anushka Chawla	17-18

<u>हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान के परिवार के बच्चों की कृतियाँ</u>

	अनिल कुमार	19
	अंगद सिंह	20
	आन्या सिंह	21
	अंगद सिंह	22
	भाविका गुप्ता	23
	आन्या सिंह	24
	निहारिका गुप्ता	25
	अवंतिका	26
	दिव्यम नड्डा	27
	घृताशी नड्डा	28
	प्रिशा गिरिधर	29
	अथर्व राणा	30

जिंदगी

इतना उलझे हैं जिंदगी की कश्मकश में

कि सवेरे साँझ का कुछ पता ही नहीं चलता ।।।।

न कहीं के लिए बढ़ रहे हैं, न कुछ नया कर रहें हैं

बस एक-एक दिन जिंदगी को देखते देखते गुज़ार रहे हैं।

क्या हैं चाहते ये खुद भी नहीं पता,

बस जैसा जिंदगी है करवा रही करते चले जा रहे हैं

असल में रास्ते भी कहाँ खुद चुनते हैं, जेसे मोड़ जिंदगी दें उन्हीं में मुड़ते हैं

हवा के बहाव में बही जा रहे हैं, पत्थरों से टकरा के गिर के

फिर उठ कर चले जा रहे हैं ।।।।।

जैसे जिंदगी करवा रही है, बस वैसे ही करते चले जा रहें हैं

जिंदगी के बताये गए रास्तों पर चल रहे हैं फिर भी बस भटक रहे हैं ।।।

खुद कहाँ कुछ कर रहे हैं, जिंदगी की हवा में बही जा रहे हैं

जैसे जिंदगी करवा रही है, बस वैसे ही करते चले जा रहे हैं.....

स्मिता कपूर

मुझे नहीं पता कि मैं क्यों रोया!

मुझे नहीं पता कि मैं क्यों रोया!

मैं चाहता था कि लोग खुश रहें,

मैं चाहता था कि लोग दूसरों को सफल देखकर खुश हों,

मैं चाहता था कि कोई अकेलेपन में साथ हो,

मैं चाहता था कि कमजोर लोग मजबूत बनें,

मैं चाहता था कोई भूखा ना रहे,

मैं चाहता था कि गरीब अमीर बनें,

मैं चाहता था लोग घर परिवार-समाज में साथ खुश रहें,

लेकिन मुझे नहीं पता कि मैं क्यों रोया !

मैं चाहता था, किसी का ख्याल रखा जाए,

मैं चाहता था कि कोई मुस्कुराए,

मैंने चाहा, किसी को प्यार मिले,

मैं चाहता था लोगों की जायज ख्वाहिशें पूरी हों,

लेकिन मुझे नहीं पता कि मैं क्यों रोया !

मैं चाहता था कि सभी जानवरों को इंसानों की तरह प्यार किया जाए,

मैं चाहता था कि सभी जानवरों की देखभाल इंसानों की तरह की जाए,

मैं चाहता था कि सभी जानवरों को भोजन मिले,

मैं चाहता था कि हर किसी को वह मिले जिसके वे हकदार हैं,

लेकिन, मुझे अब भी नहीं पता कि मैं क्यों रोया !

अनिल कुमार

हमारा संस्थान

ऊँचे शिखरों की कहानी,

हिमालय जैवसंपदा संस्थान की जबानी।

हिमालय के शिखरों से उत्पन्न,

विचारों की नई राहें, यहाँ हैं।

प्रौद्योगिकी का है यहाँ संगम,

जैवार्थिकी के उन्नयन का विधान।

जैवसंपदा की खोज में हैं हम, उत्साहित और प्रेरित,

हिमालय की गर्वशील चोटी, हमारी शान।

अकादमिक हित के लिए है यहाँ योजना,

जैवसंपदा की खोज, नवोन्मेष का है अद्वितीय ज्ञान।

उद्भवता और विकास का सिद्धांत,

हिमालयी जैवसंपदा से बढ़ाए हमारे देश का मान।

हिमाचल की ऊँचाइयों से मिलता अद्वितीय सार,

इस प्रमुख संस्थान में है विकास का संगम।

समृद्धि की एक नयी धारा, एक नया संगम,

हिमालय जैवसंपदा संस्थान, हमारी शान हमारा प्यारा।

राहुल सिंह

गांव की सुनहली यादें

गांव एक अद्भुत जगह हुआ करती है। आज के शहर-केंद्रित जमाने में गांव से होना एक नायाब और चौंका देने वाली बात हो गई है। मैं इस अंक और आगामी हरेक अंक में कोशिश करूंगा आसान शब्दों, वाक्यों और भाव-विन्यासों में गांव के हरेक रूप रंग से अवगत कराने की। इस अंक में बचपन की यादें पढिये और आनंद लेने के साथ साथ चिंतन करिये और जाहिर की गई चिंताओं पर गौर फरमाइये। तो चलिये शुरू करते हैं अपना प्यारा बचपन।

मुझे याद है अपना हंसता खेलता बचपन। जब मेरा गांव हरा-भरा हुआ करता था। परोसियों में सहयोग और अपनापा था। प्रकृति के प्रति सम्मान और आस्था का भाव था। बच्चों की टोलियां हुआ करती थीं जो तरह तरह के खेल खेला करते थे- दौड़-धूप, चोर-नुकैया, आस-पास, कबड्डी, जंजीर, करंट-पानी, छुक-छुक रेलगाड़ी, बिस-अमृत, कुरेर-कुरेर इत्यादि।

खेल और बचपन का बहुत सुंदर संयोग था। माता-पिता भी खेल में रुचि लेते थे। कुरेर-कुरेर में बच्चे गिनती सीख जाते थे। दो टीमें होतीं और दो मुहल्ले होते। एक टीम एक मुहल्ले में हजार, पांच हजार या उससे भी अधिक छोटी छोटी लकीरें बनातीं। दूसरी टीम भी दूसरे मुहल्ले मेंयही करती थी। ये लकीरें इंट, पत्थर, लकड़ियां कहीं भी बनाकर उसे छुपा दिया जाता और दोनों टीमें एक दूसरे की छिपी लकीरें ढूंढती। जो जितना अधिक ढूंढ लेती और गिनती के बाद जिसकी जितनी कम लकीरें बचतीं वो टीम जीत जाती। इस तरह बच्चों में मनोरंजन के साथ गिनती भी जीवनमें एक अनिवार्य अंग के रुप में आती और कभी न भूलती।

इसी तरह आइस-पाइस का खेल बच्चों में आब्जर्वेशन की कला विकसित करते थे। पकड़ा-पकड़ी के खेल में शारीरिक फिटनेस आता। मानसिक, शारीरिक और सामाजिक तीनों स्तर पर बच्चे स्वस्थ होते थे।

ऐसा था हमारा गांव, हमारा बचपन और हमारा स्वास्थ्य जिसे हमने आधुनिक होने के अंधे दौड़ में बिल्कुल ही खो दिया है। हम आधुनिक हों लेकिन अपनत्व की संस्कृति और बचपन के स्वास्थ्य को खोकर नहीं।

प्रणव कुमार मिश्र

अजेय और अडिग

उस रात से जो मुझे ढकती है,
खम्भे से खम्भे तक गड्ढे जैसा काला,
चाहे जो भी देवता हों, मैं उन्हें धन्यवाद देता हूं
मेरी अजेय आत्मा के लिए।

परिस्थिति की गिरफ़्त में
मैं न तो रोया और न ही जोर से रोया।
संयोग की मार के तहत
मेरा सिर खून से लथपथ है, लेकिन झुका हुआ नहीं है।

क्रोध और आँसुओं की इस जगह से परे
छाया का भय दिखता है,
और फिर भी वर्षों का खतरा
ढूंढता है, और ढूंढूंगा, मुझे बिना किसी डर के।

यह मायने नहीं रखता कि गेट कितना सीधा है,
और कितनी सजाओं का आरोप कैसे लगाया गया,
मैं अपने भाग्य का मालिक हूं:
मेरी आत्मा पर मेरा हक है।

अवनेश कुमारी

An Ode To Apoptosis Nymph

The death we are scared of
is the death that echoes in our bodies.
We call it Apoptosis
if not God, certainly a Nymph
that holds up the life we are in awe of.

The tiny life undergoes apoptosis in us each moment
to keep us alive,
Appreciate the Apoptosis Nymph before mourning it
It is she that keeps us alive.

Life creates death,
Apoptosis nymph preserves it.
The eternal cycle goes on
Right within us.

Oblivious of this
We are scared of death.
Waiting for another breath
To create one more epiphany
To fill us with one more joy.

Appreciate the Apoptosis Nymph before mourning it
It is she that keeps us alive.

What!! If one tiny life stops dying,
Won't our life be miserable
And ransack our dreamy revelation
We always dream of
The death we are scared of
is the death that echoes in us.
It holds up the life we are in awe of.

Appreciate the Apoptosis Nymph before mourning it
It is she that keeps us alive.

Satyakam

मदिरापान और धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है

आते समय 4-5 सिगरेट लेते आना, बाकी सब है
और 'जल्दी आ'...!
कितना अपनापन है इन शब्दों में....!
सिर्फ एक क्वार्टर ले आ बाकि तो बची है...!
कितनी ईमानदारी है इस वाक्य में....!
और कुछ चाहिए हो तो बता , ले आऊँगा...!
कितनी आत्मीयता है इन शब्दों में...!
स्नैक्स कम-कम खाओ यार, अभी एक क्वार्टर बचा हुआ है....!
मितव्ययिता के कितने प्रेरणादायक शब्द हैं ये...!
पुदीन हरे की गोली लेले, बाबा इलायची लेले, धनिया चबा लें, पान खा ले
नहीं तो घरवालों को गंध आएगी...!
घरवालों के प्रति कितना मान-सम्मान है इन शब्दों में...!
जल्दी-जल्दी गटक बे... बहुत देर हो गई...घर भी जाना है...!
समय का कितना महत्व प्रदर्शित है इन शब्दों में...!

मेरा वाला भी आधा पैग तू पी ले...!
कितना त्याग है इन शब्दों में...!
पानी कम डाल मेरे यार..!
कितने पर्यावरणवादी विचार हैं इन शब्दों में...!
कोई और ऐसी जगह है जहाँ इतने सारे मानवीय गुण प्रवाहित होते हों?
नहीं ना!
.फिर भी लोग दारू को ख़राब क्यों कहते हैं..??????
कटु सत्य –
पहले चिंता का विषय रहता था कि दामाद नशेड़ी ना हो..
अब घोर चिंता का विषय है कि बहु भी नशेड़ी ना मिल जाए..!
मदिरापान और धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

सहदेव चौधरी

CSIR-IHBT: From Mountain High to Cellular Deep

Where Himalayan whispers brush the sky,

CSIR IHBT's secrets lie.

Science and beauty, hand in hand,

Weave a tapestry across the land.

Petals dance in sunlit hues,

Starlight whispers cosmic clues.

Minds alight with keenest flame,

Unravel life's intricate game.

Microscopes, like eagle eyes,

Peer into cellular surprise.

Telescopes, with curious gaze,

Seek answers in the starry maze.

Genes unravel, codes unfold,

Nature's mysteries, brave and bold.

From vibrant bloom to verdant leaf,

Each whisper speaks of nature's brief.

Rain paints tears on mountain's face,

Wind murmurs secrets with gentle grace.

Nature's canvas, vast and wide,

Where science strolls with open stride.

In labs of glass and verdant field,

Knowledge blooms, its harvest yield.

Vaccines brewed, like magic potion,

New life dawns, defying notion.

From biofuels born in verdant dreams,

To eco-threads in woven streams,

CSIR IHBT, a guiding light,

Embraces truth, both dark and bright.

So let us sing, with joyful tongue,

The symphony of knowledge sung.

Science and beauty, in perfect rhyme,

A testament to Earth's sublime.

In every seed, in every breath,

The pulse of life, defying death.

In lab and garden, hand in hand,

We write the future, understand?

For in this realm, where secrets bloom,

Truth whispers from beyond the tomb.

Let hearts ignite, like fires bright,

Embrace the science, hold it tight.

For CSIR IHBT's gentle might,

Will usher in a future, light.

Amit Daroch

बस कसम ये हमने खाई है

संघर्ष सुबह और शाम किये है, वीरो ने अपने प्राण दिये है।
ए भारत माँ तुझे बचाने को, शहीदों ने बलिदान दिए है।
अब बारी है आयी हमारी भारत माँ तुझे बचाने की
हिम्मत किसी की होने न देंगे, अब भारत माँ तुझे छूने न देगें!!
इस देश मे जीना है हमको इस देश पे ही मर मिट जाएंगे
खुशबू जंग ऐ आज़ादी से इस दुनिया को महकाएँगे।
खुश मत हो तू ऐ अत्याचारी, ये खुशी नही टिक पाएगी।
कोई कसर नही छोड़ेंगे, क्योंकि अब तेरी शामत आएगी।
दूर करेंगे बेरोज़गारी और मिटेगा भ्रष्टाचार
इस देश से गरीबी हटायेंगे और पनपेगा शिष्टाचार
आतंकवाद और बलात्कार से इस देश को हमे बचाना है
कोई चिराग न बुझने पाये, कोई जोति न यू मुरझाये
इन रोशन चिरागो से हम दुनिया रोशन कर जाएंगे!!
ये संकल्प अब हमें है करना, अब ये धर्म हमारा है
बेबस और लाचारों को देना हमे सहारा है।
अब देश भक्ति की ये भावना हमने मन मे बसाई है
हम करेंगे रक्षा ऐ भारत माँ तेरी, बस कसम ये हमने खाई है
बस कसम ये हमने खाई है....!!
जय हिन्द

जगदीप

आस्था और वास्तुकला का बेजोड़ संगम: अयोध्या राम मंदिर

अयोध्या हिंदुओं का एक पवित्र तीर्थ स्थल है, जिसे पौराणिक काल से ही भगवान श्रीराम के जन्मस्थान के रूप में जाना जाता है। इस भूमि पर नवनिर्मित राम मंदिर एक समर्पित और आद्यत्मिक परियांत्रण की यात्रा का प्रतीक है। यह मंदिर भारतीय सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है। इस मंदिर का निर्माण, भगवान श्रीराम के भक्तों की श्रद्धा और भक्ति का प्रतीक है, जिसने अद्वितीयता, एकता, और सामंजस्य के मूल आचार्यों के आदान-प्रदान के उदाहरण के रूप में पेश किया गया है। इस मंदिर की स्थापना में लोगों की सामूहिक भागीदारी, सामरिकता और एक अद्वितीय एकत्रीकरण दर्शनीय हैं, जो भारतीय समाज की भूमिका को मजबूती से प्रकट करती हैं। यह मंदिर एक नए युग की शुरुआत को दर्शाता है, जहाँ समृद्धि, सामंजस्य, और तात्कालिक समस्याओं का सामंजस्यपूर्ण समाधान होने का संकेत है। राम राज्य के आदर्शों का अनुसरण करना हम सभी के लिए सामर्थ्यपूर्ण है।

राम मंदिर से जुड़े रोचक तथ्य:

1. राम मंदिर, भारत का सबसे विशाल और विश्व का तीसरा सबसे बड़ा हिंदु मंदिर है, तथा उत्कृस्थ वास्तुकला का बेजोड़ नमूना है। इसका शिलान्यास 5 अगस्त 2020 को 40 किलो चाँदी की ईंट से किया गया और 22 जनवरी 2024 (पौष शुक्ल कूर्म द्वादशी, विक्रम संवत 2080) को "अभिजीत मुहूर्त" में रामलला की प्रतिमा की गर्भगृह में "प्राण प्रतिष्ठा" की गई।
2. श्री चंपत राय, "श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास" के महासचिव हैं, जो इसके निर्माण की देखरेख कर रहे हैं। लार्सन एंड टुब्रो कंपनी इस परियाजना का ठेकेदार है।
3. गुजरात के चन्द्रकांत सोमपुरा, निखिल सोमपुरा और अशीष सोमपुरा ने मंदिर का नक्शा तैयार किया है। सोमपुरा परिवार वास्तुकार हैं, और कई पीढ़ियों से मंदिर और भवन निर्माण में विख्यात हैं।
4. राम मंदिर परिसर का कुल क्षेत्रफल 2.77 एकड़ है लेकिन मंदिर 57,400 वर्ग फीट में बना है| मंदिर, 360 फीट लंबा, 235 फीट चौड़ा, 161 फीट ऊंचा है|

5. मंदिर की नींव को 2587 क्षेत्रों से लायी गयी पवित्र मिट्टी से बनाया गया है, जिसमें शिवाजी किला, यमुनोत्री, स्वर्ण मंदिर, झाँसी, चित्तौड़गढ़, हल्दीघाटी और बिथुरी जैसे पवित्र स्थान शामिल हैं| मंदिर के चबूतरे की ऊँचाई 14 फीट है, जिसे कर्नाटक और तिलंगाना से लाये गए ग्रेनाइट पत्थरों से बनाया गया है।
6. यह मंदिर पूरी तरह से पत्थरों से बनाया गया है। मंदिर के निर्माण में स्टील, लोहे की बजाय तांबा, सफेद सीमेंट और लकड़ी जैसे सामग्री का इस्तेमाल हुआ है। यह 8-10 की तीव्रता के भूकंप तथा बाढ़ प्रतिरोधी है।
7. मंदिर का निर्माण बांसी पहारपुर, भरतपुर, राजस्थान से लाये गए गुलाबी बलुआ पत्थरों से किया गया है।
8. मंदिर के निर्माण में जिन ईंटों (राम शिलाओं) का इस्तेमाल किया गया है उन पर "श्री राम" अंकित है।
9. मंदिर की नींव के 2000 फीट नीचे 3 फीट लम्बा टाइम कैप्सूल रखा गया है। इस उपकरण में मौजूदा मंदिर, भगवान श्रीराम और उनके जन्म स्थल से जुड़ी सारी जानकारी का डेटा संस्कृत भाषा में रिकॉर्ड किया गया है ताकि भविष्य में भी लोगों को मंदिर के बारे में सही जानकारी मिल सके।
10. मंदिर के निर्माण में देश की अलग-अलग नदियों का पानी और स्वच्छ कुंडों का पानी लिया गया है। इनके साथ मानसरोवर जल और जैन्तिया हिल्स में 600 साल पुराने दुर्गा मंदिर का जल, मिंटांग और मिंटडु नदी का जल, पवित्र जल मिश्रण भी लाया गया है।
11. यह नागर शैली वास्तुकला की गुर्जर-चालुक्य शैली में बना अष्टकोणीय मंदिर है। इसमें भगवान राम की मूर्ति और राम दरबार है। मुख्य मंदिर के आगे-पीछे सीता, लक्ष्मण, भरत और भगवान गणेश के मंदिर है। दिल्ली में स्थित अक्षरधाम मंदिर भी इसी शैली में बना है।
12. मंदिर के चारों ओर आयताकार परकोटा है। परकोटे के चारों कोनों पर सूर्यदेव, मां भगवती, गणपति व भगवान शिव को समर्पित चार मंदिरों का निर्माण किया गया है।
13. मंदिर में कुल 3 मंजिल हैं, प्रत्येक मंजिल की ऊँचाई 20 फीट है। मंदिर में कुल 12 द्वार जिन्हें सागोन की लकड़ी से बनाया गया है तथा इनमें सोने की परत चढ़ाई गयी है। मुख्य द्वार का नाम "सिंह द्वार" है, जहाँ पहुचने के लिए

14.मंदिर में कुल 360 स्तंभ हैं, जिनमें से भूतल पर 160 स्तंभ, पहली मंजिल 130 स्तंभ, और दूसरी मंजिल 70 स्तंभ है। प्रत्येक स्तंभ में 16 प्रतिमाएँ है, जिनमें शिव के अवतार, 10 दशावतार, चौसठ योगिनियाँ और देवी सरस्वती के 12 अवतार शामिल है|

15.इस मंदिर में रामलला की बालअवस्था (5 वर्ष) की मूर्ति स्थापित की गयी है जिसकी ऊँचाई 4.24 फीट, चौड़ाई 3 फीट और वजन लगभग 200 किग्रा है, तथा इसे 3 खराब वर्ष पुराने श्याम शीला पत्थर से बनाया गया है। इस मूर्ति के मूर्तिकार मैसूर के अर्जुन योगीराज हैं।

16.मूर्ति के मस्तक के पास सूर्य, स्वस्तिक, शंख, चक्र और गदा तराशे गए हैं। मूर्ति के दोनो तरफ विष्णु के दस अवतार मत्स्य, कूर्म, वरः, नरसिह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कलकी को तराशा गया है।

17.मंदिर में पांच मंडप है – नृत्य मंडप, रंग मंडप, सभा मंडप, प्रार्थना मंडप और कीर्तन मंडप। मंदिर में 44 फीट ऊँचा ध्वजदंड लगा है जिसका वजन 5 टन है।

18.राम मंदिर में 6 फुट ऊँचे, 4 फुट चोड़े और 2,400 किलो वजनी "अष्टधातु" का घंटा लगाया गया है जिसे उत्तरप्रदेश के एटा जिले के जलेसर में तैयार किया गया है।

19.मंदिर के मुख्य द्वार के ताले की ऊँचाई 10 फीट, चौड़ाई 4.6 फीट, मोटाई 9.5 इंच तथा वजन 400 किलो है और इसे अलीगढ़ के सत्य प्रकाश शर्मा ने तैयार किया है।

20.राम लला की पोशाक श्री भागवत प्रसाद, शंकर लाल और मनीष त्रिपाठी जी ने तैयार की है।

सीता लखन समेत प्रभु, सोहत तुलसीदास।
हरषत सुर बरषत सुमन, सगुन सुमंगल बास॥

अनीता कुमारी, झिलमिल नाथ, शुभम जोशी, सुमन गुसाइ, खुशबू कुमारी, मीनाक्षी रावत, अपूर्वा मेहरा, दीपाली मनकोटीया, निशा भाटी, पलक, दीक्षा, और रोहित जोशी

India – Mother of Democracy

A Republic endorses the supreme power of people living in the country and only public have rights to elect their representatives as political leader to lead the country in right direction. India is a Republic country and our Great Indian Freedom Fighters have struggled a lot to achieve the "*Purna Swaraj*" in India. On 26th January 1950, the constitution of India came into effect and ever since the day is celebrated as the Republic Day in the country. Every year, the celebrations marking the day feature spectacular military and cultural peasantry. In new Delhi, armed force personnel March along the Kartavya path in an elaborate display of military might. The celebrations inaugurated with a grand parade, are held in the capital, New Delhi, from Raisina Hill near the Rashtrapati Bhavan, along the Kartavya Path, past India Gate, and on to the historic Red Fort. On this day ceremonious parades take place, which is performed as a tribute to India, its unity in diversity, and its rich cultural heritage.

The themes of the 75th Republic Day which will happen in 2024 are 'भारत - लोकतंत्र की मातृका (जननी) और विकसित भारत / Bharat - The Mother of Democracy and Developed India. The themes highlight the true nature of India as the world's largest democracy and the unwavering commitment to becoming a developed nation. 'India is the mother of democracy' the country has proved that it has a precious ability and faced many challenges during its journey of 75 years.

26th january2024 is a special day for us to come together and remember the importance of unity, diversity, brotherhood and equality among all our citizens. Let us celebrate this Republic Day with immense pride and deep love for our wonderful nation. On this auspicious day, let's join hands in the name of patriotism and strive

towards a better, more inclusive India.

We can be all heroes in our own right by offering support to friends, honouring our elders, and protecting our environment. On this republic day let us pledge to be good citizens and make our nation proud.

'The constitution is not a mere lawyer's document, it is a vehicle of life, and its spirit is always the spirit of age.' – Dr. Babasaheb Ambedker

Happy Republic Day!

Anushka Chawla

अनिल कुमार

अंगद सिंह

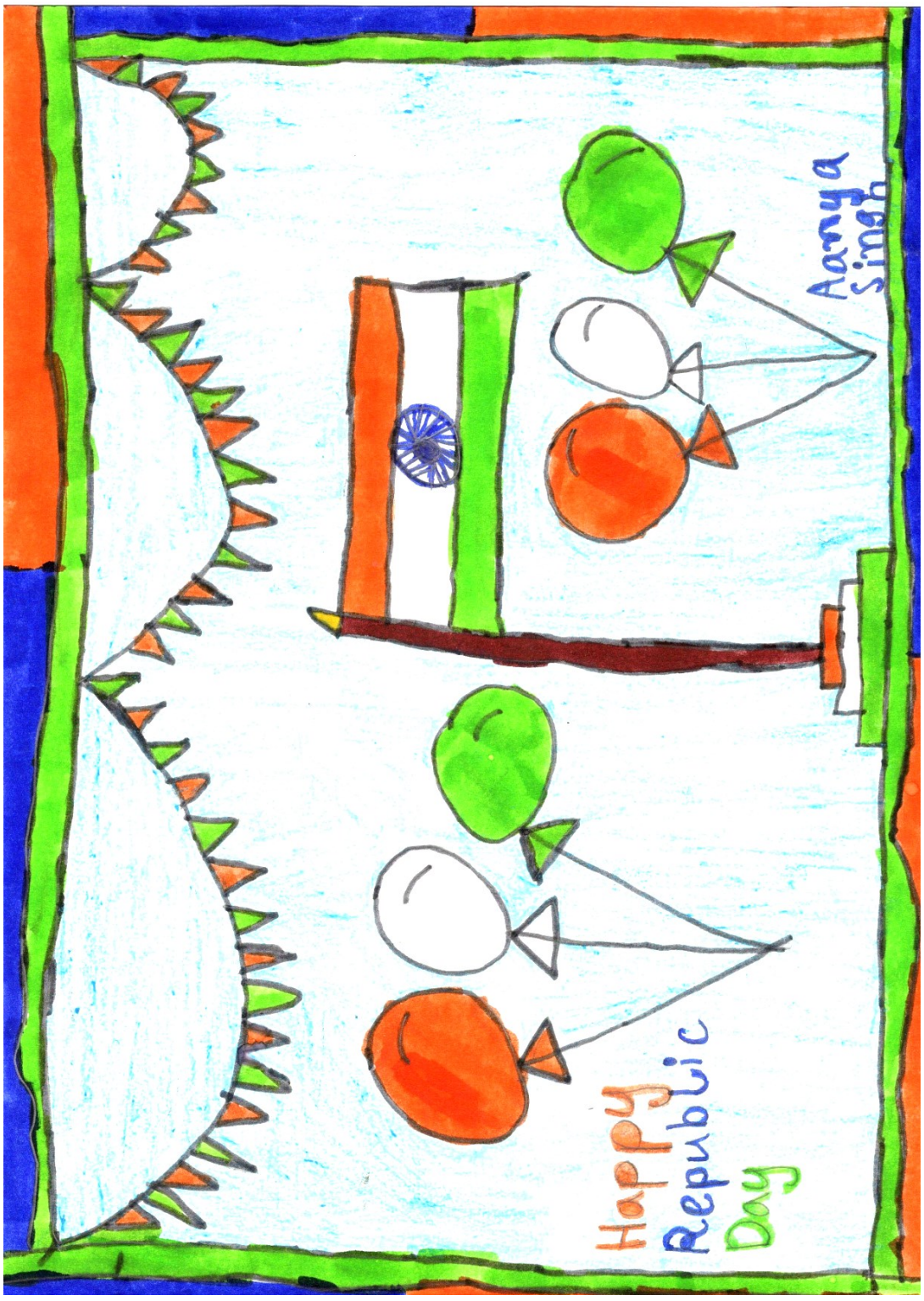

आन्या सिंह

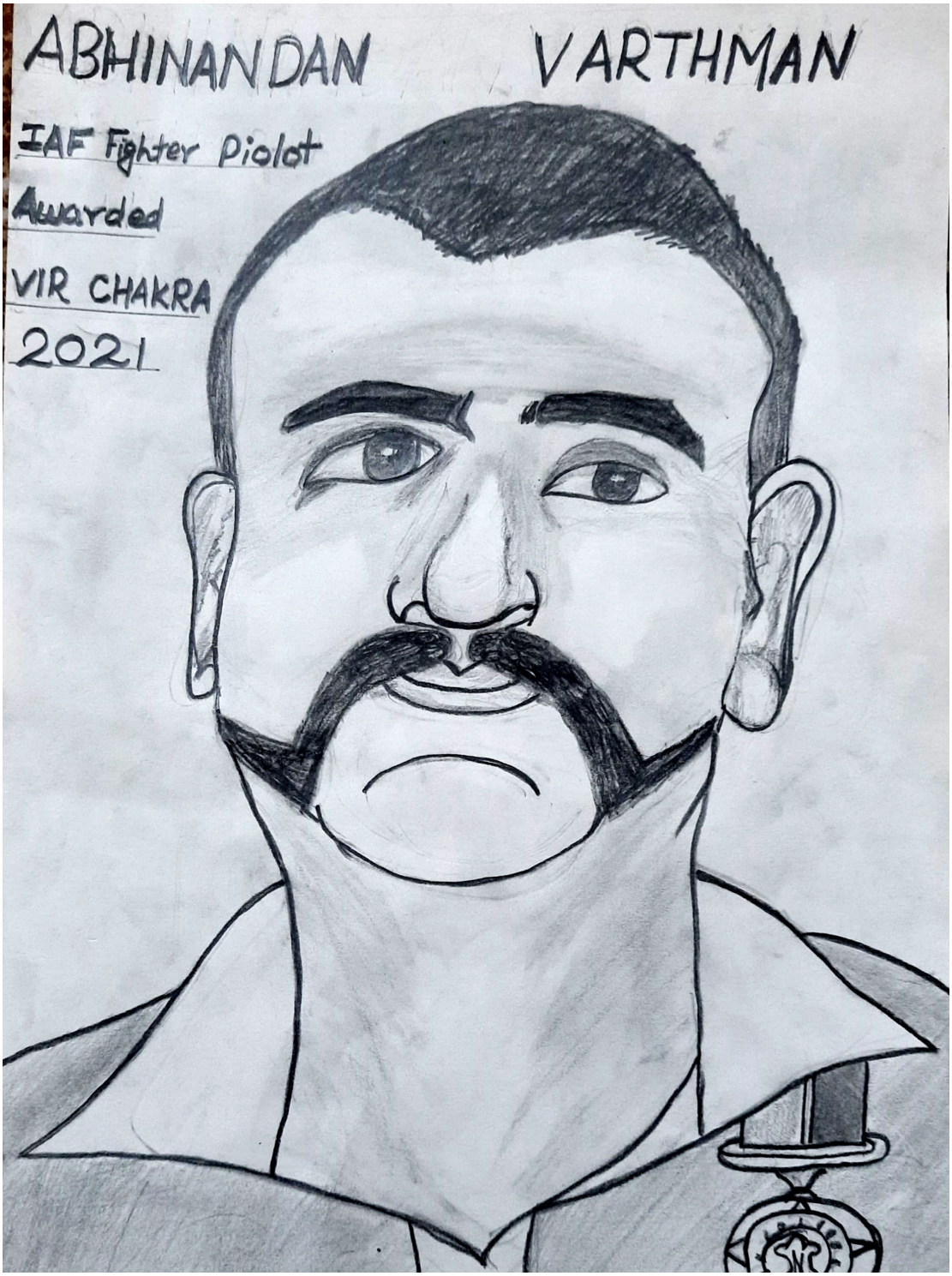
ABHINANDAN VARTHMAN
IAF Fighter Piolot
Awarded
VIR CHAKRA
2021

अंगद सिंह

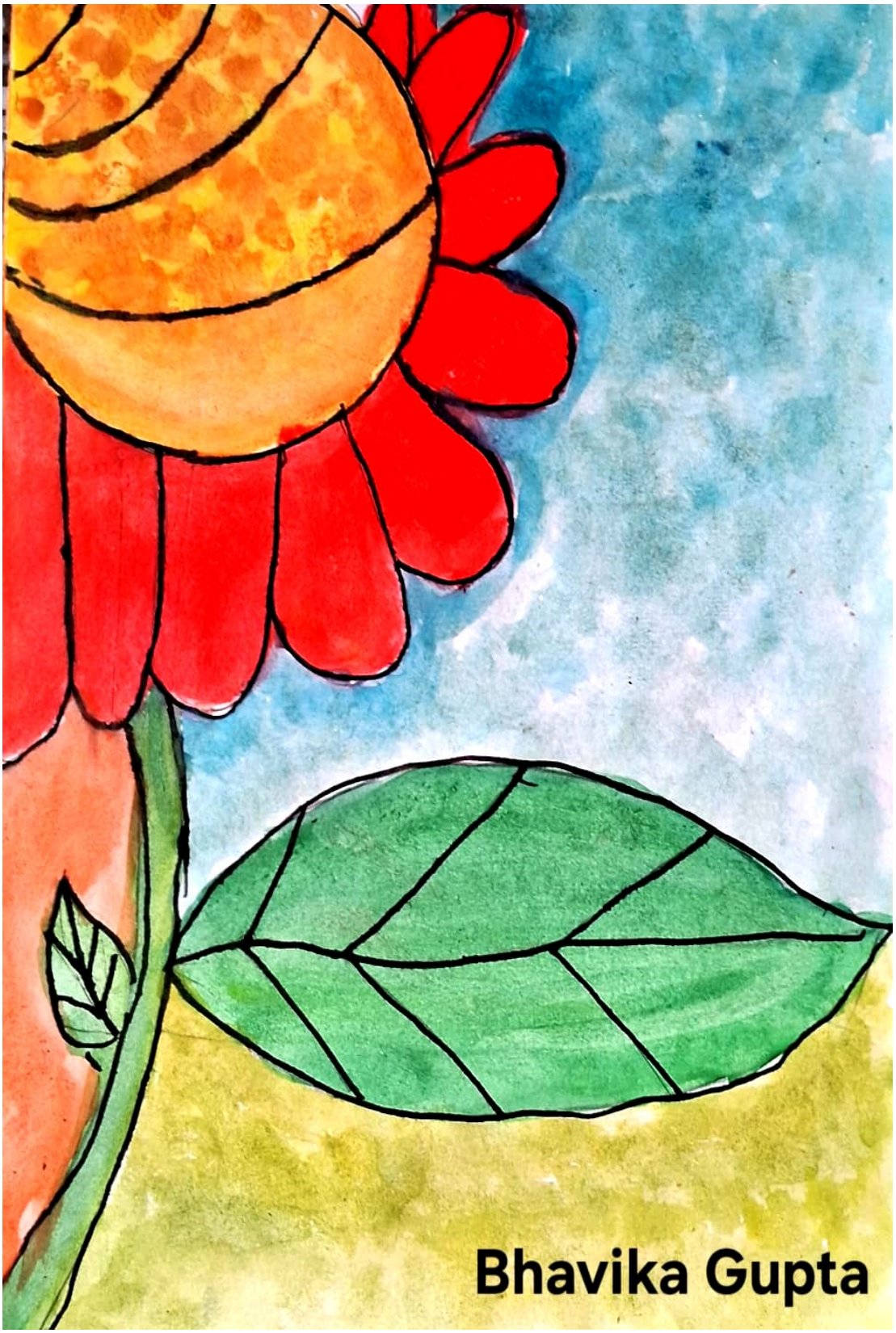

भाविका गुप्ता

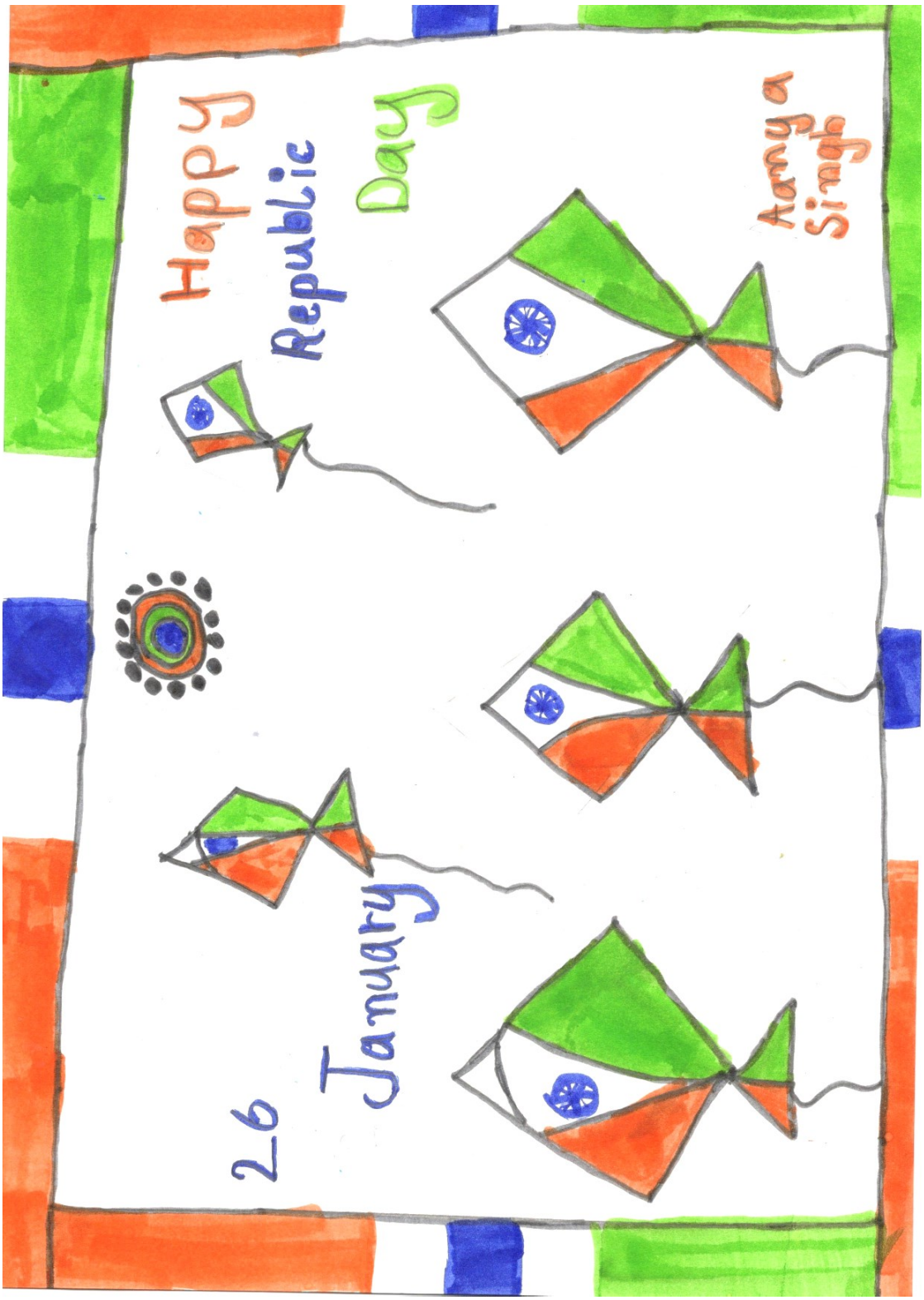

आन्या सिंह

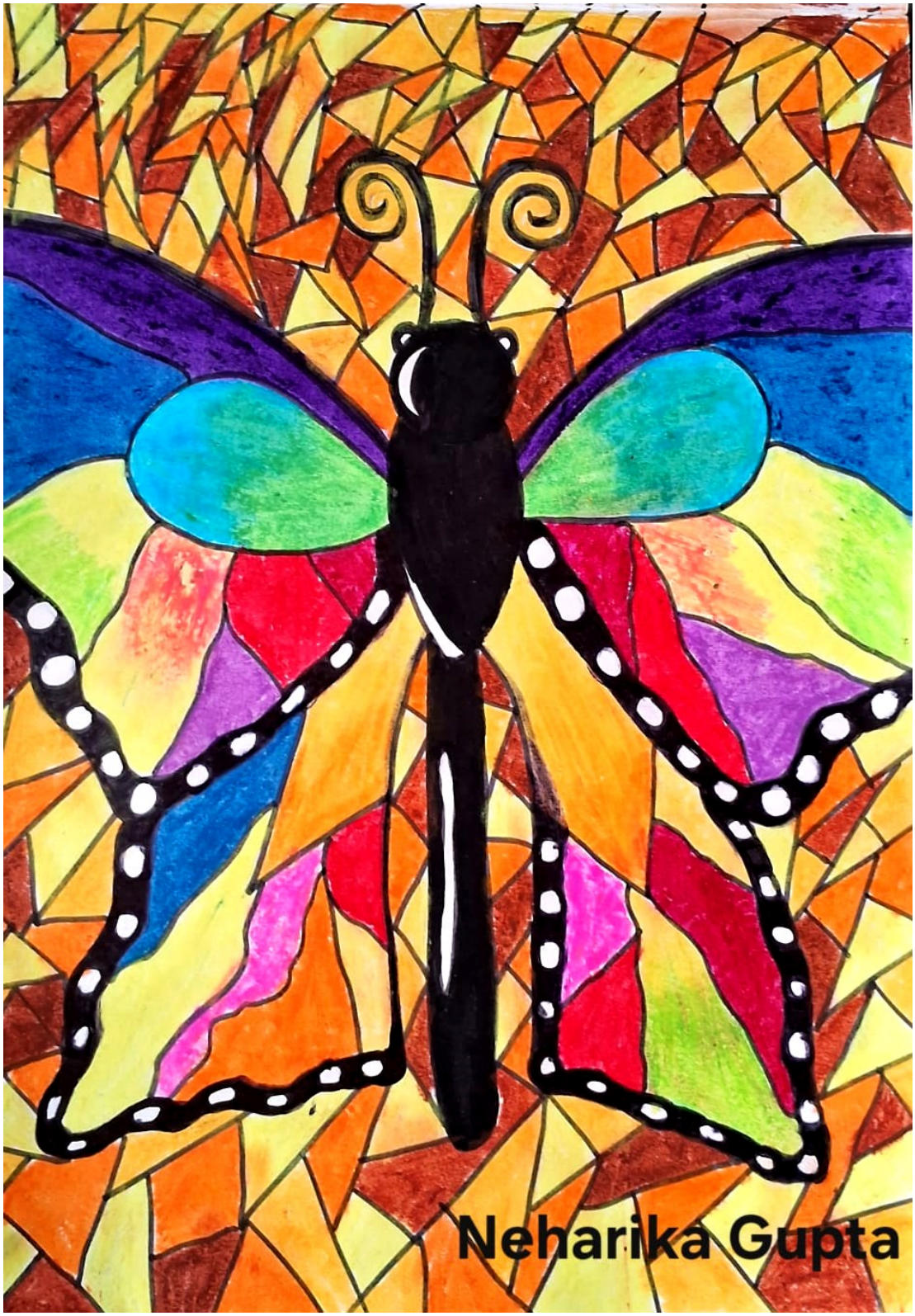

निहारिका गुप्ता

अवंतिका

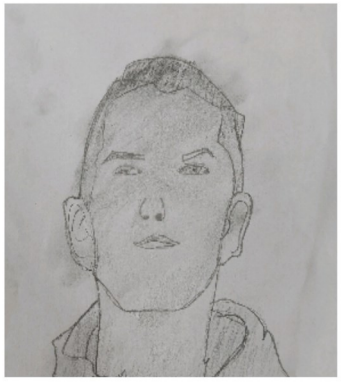

दिव्यम नड्डा

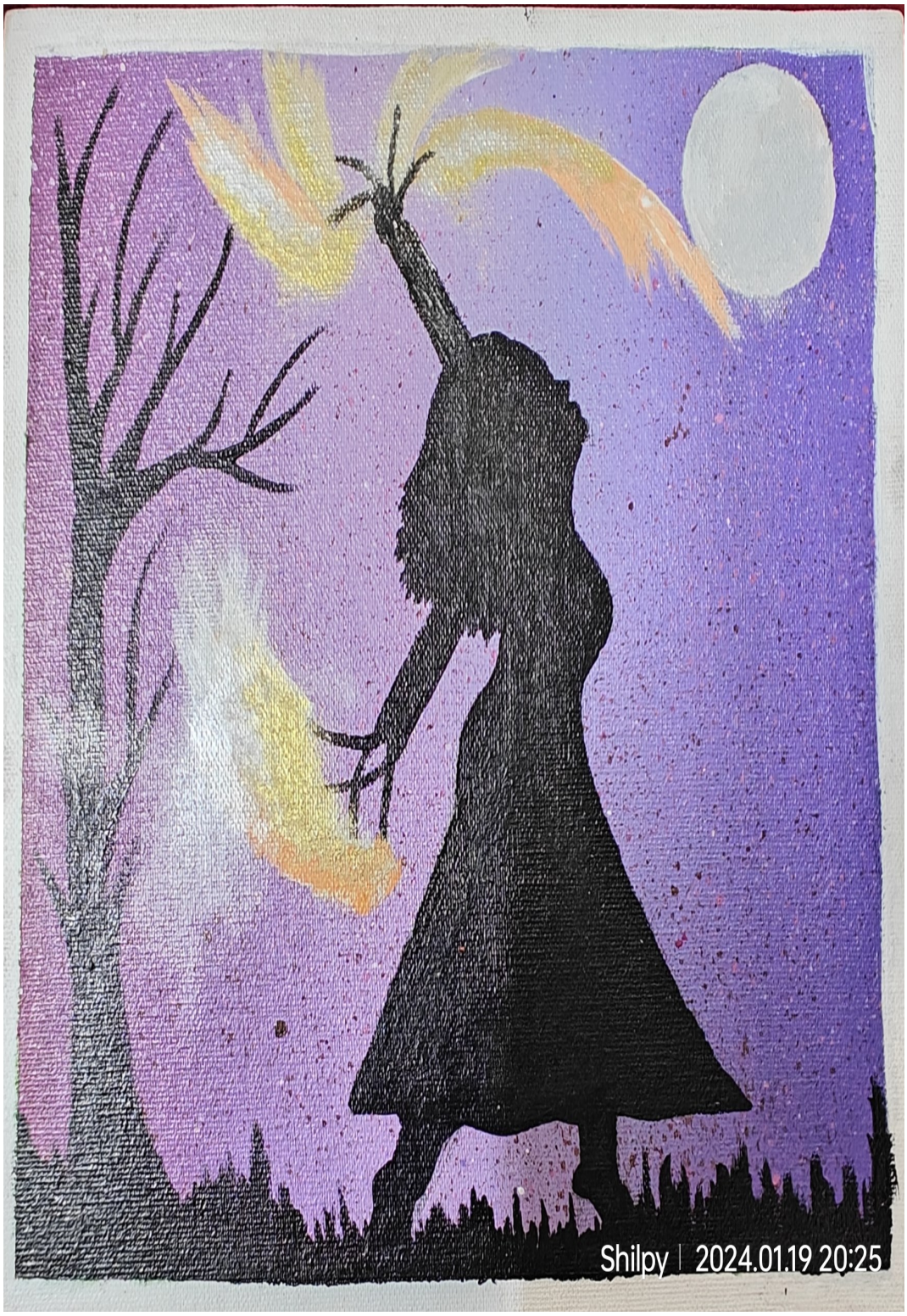

घृताशी नड्डा

प्रिशा गिरिधर

अथर्व राणा

उज्जवल भविष्य का नवोन्मेष हब

Innovation Hub for Better Tomorrow